भगवत् कृपा

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष–15, अंक–2 बुधवार, 26 फर.' 92	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी फरवरी, 1992	वार्षिक चन्दा–10.00 प्रति अंक : 1.00

आओ, हम 'योगी शताब्दी' मनायें........

[योगी शताब्दी का मंगल वर्ष आ रहा है.....
तो, प.पू. काकाश्री द्वारा स्वयं के हीरक महोत्सव (60वीं जन्म जयंती) पर हमें पूछे नीचे के चार प्रश्नों पर
सतत् चौकन्नी निगाह रखकर भीतर से टटोलें....
और सुरुचि रखकर उसके मुताबिक वर्तने लग पड़े।
यही हमने सच्ची योगी शताब्दी मनाई मानी जाएगी।

महाराज, स्वामी, ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज, ब्र. स्व. योगीजी महाराज, गुरुहरि काकाजी महाराज और प्रत्यक्ष स्वरूपों इस हेतु हमें खूब बल दें–यही प्रार्थना !]

''व्यवहारिक बुद्धि छोड़ कर–सचमुच,

- ☐ योगीजी महाराज को जो करना था उसके लिए हम तैयार (तत्पर) हैं?
- ☐ योगीजी महाराज का जो अभिप्राय था–जो भावना थी–वह हमारे दिल में अखंड रहती हैं?
- ☐ योगीजी महाराज की जो योजना थी कि पाँच पचास-दो सौ जनों को तैयार करना–उसके लिए चौबीस घंटे में से एक घंटा दिल की सच्चाई से हमारा प्रयत्न (कोशिश) है?
- ☐ अन्दर-अन्दर दूसरों को उपदेश करते हैं–परामर्श देते हैं, पर वही स्वयं पर लागू करके हम वर्त पाते हैं?

–ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज

7 मार्च.....

'साधुता का हुनर सिखानेवाले अजोड़ जादूगर का स्वधामगमन दिन.....'

7 मार्च' 86.....जिस दिन हमारे प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी महाराज ने हम सबकी जड़ता को चोट लगाने, हमारी चेतना को एक नया विकास क्रम देने अचानक स्थूल रूप से विदाई ले ली...वे तो नित्य मंगलकारी स्वरूप थे....वे कभी हमारा अहित चाह ही नहीं सकते थे.....वे तो सर्वोपरि दिव्य साकारस्वरूप–नित्य सनातन परम तत्त्व थे.....और अभी भी पहले से अधिक दिव्य स्वरूप में हमारे आस-पास पल-पल हमारी परवरिश कर रहे हैं....

जो भी जाने-अनजाने प.पू. काकाजी के संग-प्रसंग में आया...उन सभी को भीतर में अनुभूति तो हुई ही थी कि ये कोई निराले पुरुष हैं पर फिर भी हमारी ही कक्षा पर आकर जी रहें हैं... प.पू. काकाजी के दर्शन मात्र से ही हरेक को शांति अनुभव होती। उनके पास बैठने से एक हुँफ–सांत्वना मिलती कि **'ये कोई मेरे अपने हैं'**.....उनकी वाणी में निरपेक्ष प्रेम और निर्व्याज वात्सल्य का धोध बहता.....उनकी दृष्टि करुणा बरसाती.....हमारे दोष वे हँसकर बताते, कभी बातों-बातों में मार्मिक चोट लगाकर सूचन भी करते.....उनकी आशीर्वाद रूप वाणी अभय वरदान रूप बन जाती और वह हमेशा सत्य होकर ही रहती। उनके वचन संबंध में आने वाले के दिल में नई शक्ति का संचार करे.....

प.पू. काकाजी के जीवन के बारे में क्या लिखें? प.पू. काकाजी का तो जीवन मंत्र था Live life by giving out दादु.....यानि.....दोनों हाथों से देने वाला.....प.पू. काकाजी केवल प्रभु की मूर्ति लुटाते ही रहे..... अक्षरधाम की मौज बक्षिश में देते रहे....किसी से कुछ लिया भी, तो अनंतगुणा वापिस दिया....इस जगत से लेकर प्रकृति पुरुष तक की कोई बड़ाई, मान, लालसा, कीर्ति, महत्वाकांक्षा, वैभव उन्हें स्पर्श ही नहीं कर पाये थे....सब कुछ होते हुए वह भव्य स्वरूप हमारे लिए अत्यन्त सामान्य बनकर रहा...और प्रभु के कल्याणकारी गुणों की खुशबू हमारे जीवन में देनी चाही....हम सबको प्रभु के मार्ग पर अग्रसर किया....और अखंड प्रभु में रहने की रीत स्वयं प्रसंग खड़े करके–हमारे बीच ही रहकर, जीकर बताया व सिखाया.... गुरु के प्रति कैसा स्वामी-सेवक भाव..... ! गुणातीत स्वरूपों के संबंधवालों में कैसा निर्दोष भाव.... !!

प.पू. काकाजी तो आये भी नहीं थे और गये भी नहीं है।

वे तो हमें

अक्षर पुरुषोत्तम की –प्रगट की सनातन– सर्वोपरि सच्ची निष्ठा करा कर गए।

और

प्रगट को प्रत्यक्ष करने की करामत सिखाई !

अब, हमें

'तू ही आधार–तू ही आकारा' रखकर

अखंड सचेतन–सक्रिय–समतापूर्वक

साक्षीभाव में

जीना है

और

वही उनके कार्य को बहता रखा कहा जायेगा।

प.पू. काकाजी का 75वाँ जयंती महोत्सव अर्थात् अमृत-महोत्सव 1993 में आ रहा है....अब से केवल एक वर्ष रहा....समय तो अपनी तेज रफ्तार से भागता चला जा रहा है.....देखते-देखते 7 मार्च को 6 वर्ष पूरे हो जायेंगे....तो अब–

प.पू. काकाजी ऐसे थे–ऐसे थे
यूँ गाथा करने की बजाय
उन्होंने दिये–समझाये रहस्य को पकड़ कर
उनको जँचता कर लेने की चाहना रखकर
उनके कार्य को बहता रखना
यही उनके प्रति हमारी सच्ची
प्रीति कही जायेगी–

तो, हम सब अब जाग्रत बनें....और इस पवित्र 'स्मृति दिन' पर प्रार्थना करें कि–

हे महाराज ! हे स्वामी ! हे शास्त्रीजी महाराज ! हे योगीजी महाराज ! हे काकाजी महाराज ! हे पप्पाजी ! हे स्वामिजी ! हे साहेब.....

हमारे तन्त्र पर आप संपूर्ण कब्जा ले लो.... आपको 'मैत्री' बहुत पसन्द थी, तो ऐसी मैत्री– जैसे आपने गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज के वचन को अध्धर झेला कि **'तू और कान्तिभाई भाई-भाई बनकर रहना'**–वैसे आखिर तक आप रहे....राम-लक्ष्मण के भ्रातृभाव को भी भुला दिया.....यही निशान लेकर हम चलें.....

हे काकाजी ! four points programme आपको खूब पसन्द था–आपकी बलभरी वह परावाणी अब भी कानों में गूँजकर जाग्रत करती है। कम-से-कम अब तो आपके द्वारा हजारों बार दोहराई इन चार बातों को जीवन का आधार बना कर चलने लग पड़ें–

1. सुबह का अपना निजी–Personal भजन अचूक कर ही लेना और प्रार्थना करना–हे प्रभु, हे गुणातीत स्वरूपों ! आप सारा दिन मेरे साथ रहना। हर क्रिया मैं आपको याद करके ही करूँ....आप बार-बार यही कहते थे कि **'शुभ-अशुभ क्रिया का प्रारम्भ भगवान के नाम का नमक डालकर ही करो।'**

2. रात की प्रायश्चित रूप प्रार्थना करके ही सोना; सारे दिन में प्रभु को भूलकर जो भी क्रिया करी हो–उसकी माफी माँगकर, फिर वह गल्ती दोबारा Repeat न करें–इसलिए प्रायश्चित प्रार्थना करके ही सोना।

3. जो भी सेवा तुम्हें आती हो, वह अहो भाव से–अच्छी से अच्छी तरह करने की भावना से रोज एक सत्कर्म अवश्य करना।

4. स्वयं का स्वाध्याय–वचनामृत, स्वामी की बातों का वाचन आधा घंटा नियमित रूप से कर ही लेना....परिणामस्वरूप रोज एक नई सूझ मिलेगी व मन की स्थिरता दृढ़ होगी।

हे काकाजी ! आप कई बार कहते थे–**अरे ! इतना करने में आपका क्या जाता है? ये** 4 Points programme **दिल की सच्चाई व नित्य नवीन श्रद्धा से कर लो, तो आपको केवल सुख ही सुख....**

तो, अब आपके दिखाये इस रास्ते पर वफादारी से चलकर आपकी शोभा बनें–आपका परिचय बनें व सही अर्थ में 7 मार्च 'स्मृति दिन' मनायें–यही प्रार्थना !

❄ ❄ ❄ ❄

'मेरे आश्रित पर काल, कर्म, माया की हुकूमत नहीं चलती'

-भगवान स्वामिनारायण

दिल्ली के आत्मीय स्वजन प.भ. मल्कानी साहब से समग्र गुणातीत समाज अच्छी तरह परिचित है....हरिद्वार के भारतमाता मन्दिर में प.पू. काकाजी महाराज के किये संकल्प के फलस्वरूप मल्कानी परिवार पू. गुरुजी के संबंध में आया.....और बहुत थोड़े समय में ही सारे गुणातीत समाज का एक अंग समान बन गया। प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के शब्दों में–'अक्षरधाम का परिवार....।' ऐसे आत्मीय स्वजन के स्वास्थ्य के खराब होने के समाचार को सुनकर सारे गुणातीत समाज का चिन्तित होना स्वाभाविक है, क्योंकि आत्मबुद्धि व प्रीति ही हमारे सत्संग की नींव है....इसी बात को ध्यान में रखते हुए प.भ. मल्कानी साहब के स्वास्थ्य की पूरी विस्तृत जानकारी 'भगवत् कृपा' द्वारा आपके पास पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं....

19th Jan' 92 की शाम को पू. गुरुजी के साथ प.भ. मल्कानी साहब अपने Farm house पर जा रहे थे....अचानक रास्ते में प.भ. मल्कानी साहब ने पू. गुरुजी को प्रश्न पूछा कि गुरुजी, यदि कोई व्यक्ति की मानो Death होने वाली हो तो आपको दो-तीन दिन पहले पता चल जाता है? पू. गुरुजी बोले–'नहीं, मुझे पता नहीं चलता और न ही मुझे इन बातों में Interest भी है।' यह बात वहीं समाप्त हो गई....Farm house पर ठाकुरजी की आरती-धून करके, नाश्ता आदि करके रात को प.भ. मल्कानी साहब को घर पर छोड़ते हुए पू. गुरुजी वापिस मन्दिर आ गए....

रात को 3.00 बजे अचानक मंदिर के फोन की घंटी बजी और पू. गुरुजी को message मिला कि मल्कानी साहब को अचानक chest में pain उठा है और nursing home ले गये हैं.... पू. गुरुजी को तभी प.भ. मल्कानी साहब के साथ हुई शाम की पूरी बात ध्यान आई कि जरूर मल्कानी साहब को अन्दर से कुछ sign मिल रहा था और...महाराज ने हमें सतर्क किया है....पू. गुरुजी तो रात को ही भजन करने बैठ गए....सुबह उठकर सभी भक्तों को बुलाकर 12 घंटे की अखंड धून्य करने के लिए कहा और भजन रूपी शस्त्र लेकर सब बैठ गये....

पू. गुरुजी प.भ. मल्कानी साहब को देखने clinic पर गए....वहाँ E.C.G. वगैरा की report से डॉक्टर ने बताया कि Angina pain हुआ है और heart attack आने के chances थे। बम्बई के डॉ. माणके जो कि सत्संग से खूब आत्मीयता से जुड़े हैं....उनसे फोन पर पू. गुरुजी ने प.भ. मल्कानी साहब के बारे में सारी बात करी और उनको request करी कि आप दिल्ली आकर मल्कानी साहब का एक बार checkup कर लो....

1989 में अपनी एक साधिका बहन 'पू. आनंदी दीदी' का heart operation करने की जब बात आयी थी तो प.भ. मल्कानी साहब एकदम बोले थे कि–'गुरुजी, आनंदी का operation India में तो कराना ही नहीं है....मैं और शीला उसे अमेरिका ले जायेंगे।' लेकिन प.पू. स्वामिजी ने डॉ. माणके के पास से heart operation कराने के लिए कहा तो प.भ. मल्कानी साहब चुप रह गये। यानि तीन साल पहले प.भ. मल्कानी साहब के mind में Foreign treatment का खूब प्रभाव था.....लेकिन अब प.भ. मल्कानी साहब के लिए First

prefrence सिर्फ पू. गुरुजी.... ! पू. अजय, पू. विकास व सौ. शीलाआंटी को भी भीतर में थोड़ा संकल्प उठा होगा कि Angiography में कुछ निकला तो Foreign में सारी treatment करायें, पर उन्हें भी भरोसा तो यही कि पू. गुरुजी जो भी निर्णय लें....सारे परिवार का एक ही निशान– **'गुरुजी कहें वही करना है।'**

खूब busy होते हुए भी डॉ. माणके 22nd Jan.'92 की रात को 11.00 बजे की flight से प.भ. मल्कानी साहब को देखने दिल्ली आये.....रात को 12.00 बजे मल्कानी साहब को checkup किया व कहा कि Angiography कराने के बाद ही ठीक से पता चल पाएगा.....डॉ. माणके 23rd morning flight से वापिस Bombay चले गए..... प.भ. मल्कानी साहब को जब पू. अजय, पू. विकास ने पूछा कि क्या करना है अब? तो प.भ. मल्कानी साहब बोले कि Angiography कराने पर यदि कुछ निकला और operation वगैरा कराना पड़ा तो **मैं India में ही कराऊँगा क्योंकि पू. गुरुजी यहाँ है**.....यद्यपि foreign के सभी अच्छे doctors का प.भ. मल्कानी साहब को परिचय था। फिर भी पू. गुरुजी के भरोसे सारे परिवार ने नाव सौंप दी.....

24th Jan'92 morning की flight से पू. गुरुजी, प.भ. मल्कानी साहब, पू. विकास Bombay जाने रवाना हुए.....सौ. शीलाआंटी को पू. गुरुजी ने Bombay साथ में आने के लिए मना करवा दी.....आश्चर्य की बात है कि शीला आंटी ने भी हाँ कह दी.....हममें से कोई हो तो यह भी सोचे कि अरे ! लोग क्या कहेंगे कि इसे अपने husband की परवाह भी नहीं.....पर शीला आंटी को भी पू. गुरुजी की आज्ञा प्रथम.....जिस-जिस ने भी सुना कि आंटी Bombay नहीं गए.....सभी अचरज में पड़ गये.....सौ. शीला आंटी तो अपनी ननंद, relatives वगैरा को भी Airport पर यही बोले कि गुरुजी साथ हैं, तो मुझे क्या चिन्ता?

पू. गुरुजी, प.भ. मल्कानी साहब, पू. विकास, Bombay पहुँचे....प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी भी विद्यानगर से डॉ. नीलम (cardiologist) को साथ लेकर बिना किसी pre-programme के ही प.भ. मल्कानी साहब की बीमारी की खबर सुनकर Bombay पहुँच गये.....यदि कोई शादी का प्रसंग होता तो शायद प.पू. पप्पाजी नहीं जाते, परन्तु.... 25th Jan' 92 की सुबह हिंदुजा hospital में Angiography कराई और उसमें पता चला कि heart की तीन नलियों में से एक नली 95% block हुई है.....डॉ. माणके ने Angioplasty कराने का suggestion रखा...और डॉ. दलाल व डॉ. माणके ने जब Angioplasty कराने के लिए कहा तो पू. गुरुजी ने सोचा कि जब प.पू. पप्पाजी यहाँ हैं तो जो कुछ कराना है अभी उनकी हाजिरी में करा लें तो कुछ हर्जा आयेगा ही नहीं.....पू. गुरुजी ने डॉ. माणके को Angioplasty करने के लिए हाँ कर दी और प.पू. पप्पाजी को जाकर बताया....प.पू. पप्पाजी को Angioplasty की सारी प्रक्रिया का ख्याल था कि यह risky है क्योंकि यदि में नली में balloon डालते हुए नली puncture हुई तो तुरन्त By pass surgery पर ही जाना पड़ता है...प.पू. पप्पाजी बोले कि चलो धून्य करने बैठ जाओ और ठीक प.पू. काकाजी की तरह ढाई घंटे लगातार धून्य लगाई और स्वयं प.पू. पप्पाजी इतनी उम्र होते हुए एक सेवक की भाँति लगातार सात घंटे तक hospital में बैठे रहे।

वास्तव में प.पू. पप्पाजी जैसे पुरुष ऐसे चरित्र करके सेवकों को कोई अनोखी सूझ देने का एक आदर्श रखते हैं.....**आत्मीयता व सर्वदेशीयता का**

इससे अधिक अनुपम उदाहरण क्या हो भी सकता है? और इससे स्पष्ट भी है कि **कैसी अभेद दृष्टि होगी प.पू. पप्पाजी की?** जो कि प.पू. काकाजी हम सबसे चाहते थे। प.पू. पप्पाजी की हम सबसे कैसी प्रीति होगी कि जो स्वयं ऐसा जीकर हमें राह दिखाई.....**यदि हम समझें तो** ! Lots of thanks to P.P. Pappajee! गुणातीत समाज के सभी ज्योतिर्धरों, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारी स्वामिजी, पू. शांतिभाई, पू. हरिभाई साहेब, पू. ज्योतिबहन भी इस मौके पर आत्मीयता से Bombay पहुँच गये थे। Angioplasty की सब प्रक्रिया अच्छी तरह से निपट गयी....पू. गोरधनकाका ने प.पू. पप्पाजी से पूछा भी कि आप किसी करोड़पति सेठ के कारण इतनी दौड़-धूप करो वह तो माना ही नहीं जा सकता, तो बताइये आप क्यों आये? तो प.पू. पप्पाजी एकदम बोले– **'मुकुंद के लिए'**। पू. गुरुजी का कैसा relation होगा प.पू. पप्पाजी के साथ !!!

और.....28th Jan' 92 की शाम को पू. गुरुजी, प.भ. मल्कानी साहब को एकदम अच्छी तबीयत से साथ लेकर दिल्ली आये.....व दिल्ली आकर पू. गुरुजी एक ही sentence बहुत बार बोले–**'महाकाल आकर वापिस गया....'** इससे अधिक प.भ. मल्कानी साहब यही सबको कहते– This was a spiritual experience... खूब आनन्द की बात यह है कि अभी प.भ. मल्कानी साहब की तबियत एकदम अच्छी है....और वे पहले की तरह ही अपना सभी कार्य कर रहे हैं..... भगवान स्वामिनारायण व गुणातीत स्वरूपों सारे परिवार को हर प्रकार से सर्वदा सुखी व अच्छे स्वास्थ्य से रखे–यही अन्तर की प्रार्थना व शुभ कामनाओं सहित.....

भाई स्वामी के

हार्दिक जयस्वामिनारायण !

Statement about Ownership and other particulars about news paper

'भगवत-कृपा'– 'THE DIVINE GRACE'

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society A-103, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Sadhu Mukundjivandas
Nationality	:	Indian
Address	:	Yogi Divine Society A-103, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
4. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
5. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Owner's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	

I, Sadhu Mukundjivandas, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

Sadhu Mukundjivandas

Signature of Publisher

Date: 25th Feb, 1992

शतं जीव शरदः

आओ ! आओ ! फूलों, गुलाल और अंतर के भाव से स्वागत की तैयारियाँ करें....दर्शन, सेवा, समागम, आशीर्वाद का अमूल्य लाभ लेकर स्वयं को धन्य करे लें.....पर किनका स्वागत? अरे ! दिल्ली के अशोकविहार मंदिर के प्रांगण में गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा चुने गए लाडले युवा नेता प.पू. साहेब अपनी जयंती के शुभ दिनों में ही पधार रहे हैं.....प.पू. साहेब की जयंती मनाने का सद्भाग्य प्राप्त हुआ–वही हमारा कैसा अहोभाग्य? दिल्ली के हरिभक्तों का तो आनंद समाता नहीं.....

प.पू. साहेब यानी परमानंद स्वरूप.....प्रथम दर्शन से ही दिव्यानंद की अनुभूति होती है.....उनकी हँसती निर्दोष मूर्ति हृदय भेद कर भीतर में बैठ जाती है....हाव-भाव, हलन-चलन, वाणी में ब्रह्मनाद की निराली मस्ती.....निर्मल हृदय...कोई बनावट नहीं.....एकदम निखालस–अनंत वंदन.....प्रभु स्वरूप प.पू. साहेब को.....

स्वामिनारायण भगवान की अनुपम कृपा से गुणातीत स्वरूपों मुमुक्षुओं को बक्षिश में मिले हैं....उनमें से एक 'प.पू. साहेब' हमें गुरुहरि योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी ने भेंट में दिये....गुरुहरि योगीजी महाराज प.पू. साहेब के बारे में बोले थे–**यह तो हमारा भागीदार है....ब्रह्मविद्या सिद्ध करे अस्सी राहबरों के महारथी हैं।**

अपनी बुद्धि व कल्पना में भी न आये.....ऐसा कार्य गुरुहरि योगीजी महाराज करके गये.....सर्वप्रथम भावी समाज के नूतन सर्जन के लिए युवा शक्ति में धार्मिक संस्कारों का सिंचन किया....एक नवक्रान्ति की शुरुआत की–विशेष अनुग्रह करके युवकों के साथ हृदय से प्रेम का संबंध बाँधा.....युवकों में रसबस हुए और नये वैज्ञानिक युग के **'कर्म योगी साधु'** भगवान के धारक बनाये.... गुरुहरि योगीजी महाराज के रूप में कैसी एक 'दिव्य माँ' इस धरती पर चलते-फिरते चैतन्य मंदिर तैयार करके सनाथ बनाने आई थी....वह आज के दिव्य समाज के दर्शन द्वारा अनुभव होता है।

प.पू. साहेब की महिमा, गुणों के बारें में शब्दों में क्या लिखें.....? गुरुहरि योगीजी महाराज से लेकर सब गुणातीत स्वरूपों के पास प.पू. साहेब केवल सरलता, स्वामी-सेवकभाव रख कर ही जिये....प.पू. काकाजी कई बार कहते थे– **'जशभाई साहेब यानी बिना मन का जीने वाला माहात्म्य सम्राट'**.....प.पू. साहेब स्वयं प्रभु सन्मुख–गुरुमुखी होकर जीये और संबंध में आने वाले को भी प्रभु सन्मुख किया.....अनोखी सहजावस्था....केवल प्रभु देने की रुचि....चैतन्यों को सुखी करने की सुरुचि..... बदले में कोई अपेक्षा नहीं.... निरपेक्षभाव.... गुण-दोष का भी भार नहीं..... वास्तव में केवल बौद्धिक स्तर पर से आयी ज्ञान की बातें सामने वाले के भीतर को स्पर्श कर ही नहीं सकतीं....प.पू. साहेब की बातें मुमुक्षुओं को सहज ही स्पर्श करती हैं, वर्तन में आती हैं और रूपांतर करती हैं क्योंकि वह प्रभु में से आती हैं.....आज प.पू. साहेब के संबंध से देश-विदेश में आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाले प्रत्येक मुक्त की प्रगति हो रही है...आंतरिक परिवर्तन हो रहा है.....प.पू. साहेब संकल्प से 'से' रहे हैं....

तो आइये, ऐसे परमपुरुष की जयंती मनाने का स्वर्ण अवसर हम चूकें नहीं....और प्रार्थना करें हे साहेब ! आप हमारी आत्मा के राहबर बनो.... हमारी प्रत्येक क्रिया में भक्ति प्रगटाने हमारे प्रेरक बनो.....यही आरजू !

** ** **

(राग—एक जटी मजाज.....)

तेरा स्वागत है तेरा आसन है, दिल रोम-रोम में.....
तेरा संबंध है चैतन्य से चैतन्य गूँज रहा है.....
जो खुशी हो तुम्हारी सही.....
हर खुशी हो हमारी वही.....

नया रचाया है इतिहास तूने तेरी दृढ़निष्ठा से....
उन्हें सजाया है तूने निर्दोषबुद्धि का पान कराके....
खारे पानी बने मीठे पानी तेरी स्नेहधारा से.....
हर उलझन डूब गई जनम जनम की भक्ति पूर में...
जो खुशी.....

तेरे वचन सब फलित हुए हैं बिन साधन से....
तेरे सपने बने सच्चे तेरी सुहृद्प्रार्थना से....
हर दिल दिमाग में बहते रहे हैं सूर एकता के.....
यही ध्यान, ज्ञान यही कर्म बना है सर्वस्व देके...
जो खुशी हो.....

किया अनुग्रह बड़ा हम पे तेरी दिव्य शक्ति ने...
तेरा नाम-काम रोशन हुआ तेरे वारिस से....
ज्ञान ज्योति मिली दिव्य ज्योति जली हर आतमदीप में
अनुरोध है इस ज्योति को हर पल हम सब समझें.....
जो खुशी हो....

❄ ❄ ❄ ❄

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	29.2.92	शनिवार	विजया एकादशी, व्रत
2.	दि.	2.3.92	सोमवार	महाशिवरात्रि व्रत
3.	दि.	7.3.92	शनिवार	ब्र.स्व. काकाश्री का स्वधामगमन दिन
4.	दि.	15.3.92	रविवार	एकादशी, दिल्ली में प.पू. साहेब की जन्म जयन्ती मनायेंगे
5.	दि.	18.3.92	बुधवार	पूर्णिमा, पू. भगतजी महाराज का प्राकट्य दिन, होलिका दहन दहन
6.	दि.	19.3.92	वीरवार	धुलडी, होली रंगोत्सव, प.पू. साहेब की जन्म जयंती

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY
A 103, Ashok vihar-III, Swaminararan Marg. Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7128838
Printed at **R.P. Printers**, Shahadra, Delhi-110032